पाण्डुलिपि सम्पादन : समस्या एवं समाधान

प्रीति साहू
जयपुर

पाण्डुलिपि शोध शोधकार्य को सामान्य प्रणाली से पर्याप्त भिन्न प्रक्रिया है, जिसे यत्नसाध्य गहन प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है कि पाण्डुलिपि शोध विविध समस्याओं एवं जटिलताओं के कारण उतना सहज नहीं है, जितना इसे समझा जाता है। पाण्डुलिपि शोध का प्रारम्भिक स्वरूप पाण्डुलिपि का सम्पादन है। पाण्डुलिपि सम्पादन का कार्य जब शोध के तौर पर किया जाता है तो शोधकर्ता के समक्ष प्रारम्भ से ही समस्यायें दृष्टिगोचर होती है, जो निम्न रूपों में हो सकती हैं।

पाण्डुलिपि सम्पादन के पथ में आने वाली समस्याओं को विविध रूपों में देखा जा सकता है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम मुख्यत: ८ प्रकार की समस्याओं का अध्ययन करेंगे। 1. पाण्डुलिपि प्राप्ति से सम्बन्धित समस्या 2. पाण्डुलिपि की वास्तविकता सम्बन्धित समस्या 3. लिपिज्ञान से सम्बन्धित समस्या 4. लिपि सम्बन्धी समस्या 5. पाण्डुलिपि पठन सम्बन्धी समस्या 6. सम्पादन सम्बन्धित समस्या 7. पाठालोचन सम्बन्धित समस्या 8. कालज्ञान सम्बन्धी समस्या

1. पाण्डुलिपि प्राप्ति की समस्या : किसी भी शोध संस्थान से पाण्डुलिपि प्राप्त कर पाना सहज कार्य नहीं है। यदि आपको पाण्डुलिपि प्राप्त करनी है तो सर्वप्रथम आप जिस संस्था / विश्वविद्यालय / शोध संस्थान से जुड़ कर शोधकार्य सम्पन्न करना चाहते हैं, वहाँ के अधिकारी का प्रमाणपत्र आपको प्राप्त करना होगा। पाण्डुलिपि ग्रन्थागार में उक्त प्रमाण पत्र के आधार पर आपको पाण्डुलिपि की फोटोप्रति उपलब्ध करायी जा सकती है। अनेक पाण्डुलिपि ग्रंथागार, शोधकर्ताओं को सदस्यता भी प्रदान करते हैं, अत: शोधकर्ता चाहे तो सदस्यता ग्रहण कर सकता है। इससे उस ग्रंथागार के साथ उसका स्थायी सम्बन्ध बन जाता है। भविष्य में अपनी अपेक्षा के अनुसार वह अन्य पाण्डुलिपि की भी फोटोप्रति उपलब्ध कर सकता है।

2. पाण्डुलिपि की वास्ताविकता : जो पाण्डुलिपि आपने उपलब्ध की है वह फोटो प्रति मात्र है किन्तु मूल पाण्डुलिपि असली है अथवा नकली ? इसे जानना भी बहुत बड़ी समस्या है। इसके लिए कुछ मानक निर्धारित हैं। जिनके आधार पर पाण्डुलिपि का परीक्षण किया जाता है। यदि मूल पाण्डुलिपि उन मानकों पर खरी सिद्ध होती है तो उसे असली माना जाता है। नकली पाण्डुलिपि में आपको अपपाठ या भ्रष्टपाठ या प्रक्षेप अधिक मात्रा में मिल सकते हैं जो आपके सम्पादन कार्य को कठिन बना सकते हैं। अतः असली पाण्डुलिपि के आधार पर ही

सम्पादन कार्य करना चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि एक ही ग्रंथ की दो या दो से अधिक अलग अलग लिपिकारों की पाण्डुलिपियाँ आपके पास हो तभी आप पाठालोचन को सुगम बना सकेंगे।

3. **लिपिज्ञान की समस्या :** आप जिस लिपि को जानते हैं उसी लिपि में पाण्डुलिपि पढ़ सकते हैं। भाषा के लिए यह अनिवार्य नहीं होता कि वह किसी एक की लिपि में लिखी जाये। अत: किसी भी लिपि में, किसी भी भाषा की पाण्डुलिपि उपलब्ध हो सकती है। आप जिस ग्रन्थ पर कार्य करना चाहते हैं, वह आपको किस लिपि में उपलब्ध हुआ है ? उस लिपि का ज्ञान आपको होना चाहिए। लिपि सीखने हेतु आपको जहाँ भी व्यवस्था उपलब्ध हो वहाँ लिपिज्ञान कर सकते हैं। लिपि प्रशिक्षण के वर्गों एवं शिविरों में भाग लेकर भी आप लिपियों के प्रारम्भिक स्वरूप एवं उनकी वर्णमाला को जान सकते हैं। इससे यह जान पायेंगे कि यह ग्रन्थ अमुक लिपि में लिखा हुआ है तथा जानकारी होने पर आप उसकी वर्णमाला से उसे पढने का प्रयत्न कर पायेंगे।

4. **लिपि समबन्धी समस्यायें :** पाण्डुलिपि पढ़ते समय लिपि सम्बन्धी भी कई समस्यायें हमारे सामने आती हैं। जैसे - लिपिभ्रम का होना। लिपिसाम्य के कारण किसी लिपि को समझ लेना आपके कार्य को बाधित कर सकता है। लिपिज्ञान होने पर भी पाण्डुलिपि पठन के समय वर्णसाम्य या शब्दसाम्य के कारण आप कहीं भी भ्रमित हो सकते हैं। अतः वर्णों एवं शब्दों की भिन्नता को सूक्ष्मता से पहचानना चाहिए।

लिपिज्ञान के अंग रूप में कुछ विशिष्ट संकेताक्षरों का भी ज्ञान कराया जाता है, जैसे 'v', '.', '-', '=', 'o' आदि। पाण्डुलिपियों में ये सभी संकेताक्षर एक विशिष्ट निर्देश करते हैं। इनके ज्ञान के अभाव में भी आप पाण्डुलिपि का सही सम्पादन नहीं कर सकते। कहीं पुनरावृत्ति, शब्दाभाव या वाक्याभाव भी हो सकता है। ये सब समस्यायें सम्पादन में आती ही हैं, अत: इस पर ध्यान दें तथा ऐसे स्थानों को चिह्नित कर लें। इन पर अनुभवी व्यक्तियों का परामर्श लिया जा सकता है।

5. **पाण्डुलिपि पठन सम्बन्धी समस्यायें :** पाण्डुलिपि के पठन में प्रथमतया बड़ी समस्या तब होती है, जब लिपिकार ने सभी शब्दों को एक ही पंक्ति में मिला कर लिख दिया हो। पंक्तिबद्धता की समस्या का निदान यही है कि आप शब्द के स्वरूप को पहचानें तथा शब्दों की भिन्नता को पहचानें। कहीं कहीं स्थानभेद से या लिपिकार की लेखन प्रक्रिया से भी लिपि में भिन्नता प्रतीत होने लगती है किन्तु आप इसे पहचानेंगे तो ही सही पाठ को समझ सकेंगे। पाण्डुलिपि के पाठक को शैली का ज्ञान भी अनिवार्य है क्योंकि शैली के आधार पर ही प्रक्षेपों को समझा जा सकता है। कहीं कहीं शैली में इतनी समानता होती है कि प्रक्षेपों को समझ पाना बड़ा कठिन हो जाता है, अतः शैली को समझने में भी आपकी सूक्ष्मदृष्टि होनी चाहिए।

6. **सम्पादन से सम्बन्धित समस्यायें :** पाण्डुलिपि के सम्पादन हेतु पृष्ठभूमि अथवा भूमिका में पाण्डुलिपि

की उपलब्धि, स्थिति, स्वरूप एवं सम्पादन की आवश्यकता, महत्ता एवं उपयोगिता के बारे में तो आप लिखेंगे ही किन्तु ग्रन्थगार के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को भी ज्ञात करके लिखना चाहिए। इस हेतु आपको बाह्य अथवा अन्तरंग प्रमाण जुटाने होंगे। सम्पादन में प्रामाणिक जानकारी जितनी उपलब्ध हो सके उसे देना चाहिए। यदि जनश्रुति से भी कुछ ज्ञात होता है तो किंवदन्ती के रूप में उसे दिया जा सकता है। ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ के काल के ज्ञान की भी बड़ी समस्या होती है, अतः बाह्य एवं अंतरंग दोनों प्रकार के प्रमाणों के आधार पर ग्रन्थकार के स्थितिकाल का तथा ग्रन्थ के रचनाकाल का निर्णय किया जाना अपेक्षित है। इससे आपके शोध की यत्न-साध्यता प्रतीत होगी। इसके साथ ही ग्रंथ की विषयवस्तु का भी सारांश रूप में उपनिबन्धन किया जाना चाहिए।

7. **पाठालोचन सम्बन्धी समस्यायें :** मूल पाठ सर्वाधिक विशुद्ध रूप में प्रस्तुत कर सके इसके लिये पाठालोचन अपेक्षित होता है, किन्तु पाठालोचन के समय भी अनेक समस्यायें हमारे सामने आती हैं, जैसे – पाठभेद या पाठान्तर की समस्या। पाठभेद का तात्पर्य है शब्द में परिवर्तन या भिन्नता। जब आप दो या दो से अधिक एक ही ग्रंथ की पाण्डुलिपियों का पाठालोचन करते हैं तो उसमें कई स्थानों पर शब्दों के स्वरूप में अन्तर दिखायी देता है, कहीं पूरा शब्द ही अलग होता है, कहीं उस शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द लिखा होता है। इसी प्रकार कही कहीं कोई वाक्य भी अधिक हो सकता है। इन सबका पृथक सारणीयन करना आवश्यक है। इनसे टिप्पणी या पादटिप्पणी बनाने में आपको सहजता रहेगी। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं शब्द छूट गया हो अथवा वाक्य या पंक्ति ही छूट गयी हो। इनको भी विवरण में लिखना तथा टिप्पणी में दर्शाना अनिवार्य है।

8. **कालज्ञान सम्बन्धी समस्यायें :** पाण्डुलिपियों में काल का निर्देश संवत् के माध्यम से उपलब्ध होता है। यह संवत् कौनसा है यह भी समस्या सामने आती है। अत: पहले निर्धारित होना चाहिए कि शक संवत् है, विक्रमी संवत् या अन्य कोई संवत् है। तब ही आप शताब्दी उसके पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध का सही आकलन कर सकते हैं। इसी प्रकार संवत् के संख्यांकों के स्थान पर कई जगह शब्द लिख दिये जाते हैं। जैसे : वसुरामरामा: यहाँ 'वसु' शब्द का अर्थ '८' है, 'राम' का अर्थ '3' है तथा संख्यांक को विपरीत अर्थ से जाना जाता है अत: यहाँ इसका अर्थ होगा '338' | इस प्रकार आपके समक्ष कालज्ञापक वर्णबोधक शब्दों को जानने की भी समस्या हो सकती है। अनेक गन्थों एवं पाण्डुलिपि सम्बन्धी ग्रन्थों में इनका उल्लेख है, अतः आपको इनका भी ज्ञान करना अनिवार्य है, जिससे भूलवश गलत नहीं लिखा जावे।

निष्कर्ष : उक्त समस्याओं का निराकरण करते हुए जब मूलपाठ का निर्धारण हो जावे तब भी एक बार व्याकरणिक दृष्टि से तथा दूसरी बार कोश के आधार पर शब्द स्वरूप की सम्यक्तता की दृष्टि से मूलपाठ का पुन: पर्यालोचन कर लेना चाहिए। इससे आपके मूलपाठ की विशुद्धता प्रामाणिक हो जायेगी। पाण्डुलिपि में यदि आपको विषयगत विशिष्ट पारिभाषिक शब्द इस वाक्य में उपलब्ध है, तो आप उन्हें परिशिष्ट में दे सकते हैं।